माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का शंकराचार्य नेत्रालय के लोकार्पण समारोह में उद्बोधन

स्थान :- झोतेश्वर,अमरकंटक दिनांक :- 7 जून, 2013 समय :- अपरान्ह 12.15बजे

e[; vfrfFk Hkkjr d jk"Vifr ekuuh;

Jh i.ko e[kth th]

txnx: 'kdjkpk; Lo:ikuUn ljLorh th

egkjkt

Lokeh lnkuUn ljLorh th egkjkt

Lokeh vfoeDr'ojkuUn th egkjkt

in'k d e[;e=h Jh f'kojkt flg pkgku th]

Jh lj'k ipkjh io dUnh; e=h

vkef=r fof'k"V vfrfFkx.k rFkk

lekjkg e mifLFkr vfrfFkx.k]

i=dkj cU/k ,o

vkef=r ic) ukxfjdx.k A

सर्वप्रथम मैं श्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगदगुरू शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज के चरणों में शत-शत प्रणाम करता हूं।

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज की तप:स्थली परमहंसी गंगा आश्रम झोतेश्वर में शंकराचार्य जी के श्री नाम से स्थापित शंकराचार्य नेत्रालय के लोकार्पण समारोह में उपस्थित होकर मैं अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। देश के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी की उपस्थिति ने इस समारोह को भव्यता और गरिमा प्रदान की है। मैं प्रदेश का प्रथम नागरिक होने के नाते आज यहां उनका हार्दिक स्वागत करता हूं और आत्मीय अभिनन्दन करता हूं।

आदिवासी वनवासी क्षेत्र के नेत्र रोगियों के उपचार की मंगलकामना के साथ सर्वसुविधायुक्त नेत्रालय की स्थापना कराकर पूज्य शंकराचार्य जी महाराज के प्रिय शिष्य दण्डी स्वामी सदानन्द सरस्वती जी महाराज ने इस ग्रामीण क्षेत्र को अद्वितीय उपहार प्रदान किया है, उसके लिए मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करता हूं। स्वामी सदानन्द सरस्वती जी महाराज का यह उपहार समाज, देश और विश्व के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा। मुझे आशा है कि यह नेत्रालय क्षेत्र के आदिवासी और गरीबों के लिए ही नहीं, प्रदेश और देश के गरीब नेत्र-रोगियों के लिए वरदान सिद्ध होगा।

शरीर, इन्द्रिय सत्व और आत्मा के संयोग का नाम आयु है और यही जीवन है। स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन के चरम लक्ष्य धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। आंखें मानव-शरीर में सबसे महत्वपूर्ण और बहु उपयोगी अंग है। नेत्र के बिना मनुष्य का पूरा जीवन अंधकार मय हो जाता है। वह प्रकृति और जीवन की सुंदरता का आनंद नहीं ले सकता है तथा पराश्रित भी हो जाता है। उसके लिए आजीविका कमाना भी एक समस्या हो जाती है।

हमारे यहां तो कहा ही गया है-

""सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:।

सर्वे भद्राणि पश्चयन्तु, माँ कश्चिद दुख भाग्भवेत।।""

अर्थात

""सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगल घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुख का भागी न बनना पड़े।""

जन्म लेना और अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करते-करते मर जाना जीवन की परिभाषा नहीं है, मनुष्य जीवन की तो बिल्कुल भी नहीं। सुख की इच्छा तो सभी करते हैं, पर सुखी कौन है और सुख कहां है? सुख तभी सम्भव है जब हम स्वस्थ हों। बिना स्वस्थ शरीर के सभी भौतिक संसाधन होते हुए भी, सुख की कामना असंभव है।

वृद्धावस्था में तो मनुष्य अन्य दूसरे तमाम रोगों के साथ आंख के रोग से तो ज्यादा ही परेशान रहता है। आज के इस युग में बदलती जीवन शैली और बढ़ते प्रदूषण के कारण छोटी उम्र से ही बच्चों की नेत्र ज्योति कम हो जाती है।

ग्रामीण चिकित्सा पद्धति के मूल सिद्धांतों और यथार्थ उपयोगिता का ज्ञान मानवजाति के कल्याण में लगाया जाये तो विकट बीमारियों से बचने की संभावना बढ़ जाती है। भारत में बहुतायत आबादी गांव में बसती है इसके बावजूद हर गांव तक आरोग्य की सुविधा पहुचाने का स्वप्न अभी पूरा नहीं हुआ है। शहरों में तो नेत्र चिकित्सालय पर्याप्त मात्रा में हैं परन्तु ग्रामीण, आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों में नेत्र चिकित्सालयों की अभी भी बहुत कमी है।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और सुविधाओं के बिना देश की प्रगति संभव नहीं है। स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए धनराशि के अतिरिक्त प्रशिक्षित और सक्षम अमला भी चाहिए जो पीड़ित मानवता और दुखी जनों की निःस्वार्थ और स्वप्रेरित सेवा की भावना से समर्पित रहे।

स्वास्थ्य सुविधा प्राप्त करना हर मनुष्य का बुनियादी मानव अधिकार है। केवल शासकीय कोशिशों से स्वास्थ्य सुविधाएं आमजन तथा गांव-गांव तक नहीं पहुंचाई जा सकती हैं इसके लिए निजी और स्वंयसेवी संस्थाओं को भी आगे आना होगा।

अच्छे इलाज की सुविधाओं की आशा लेकर गरीब और जरूरतमंद शहर की ओर जाते हैं लेकिन अशिक्षा और अज्ञानता के कारण गरीब और आदिवासी लोग वहां उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं का भी पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं। बढ़ती जनसंख्या के सामने चिकित्सा विज्ञान के साधन और सुविधायें बौनी साबित हो रही हैं। गांवों में रहने वाली बड़ी जनसंख्या उचित इलाज से वंचित ही रह जाती है।

परमपूज्य जगदगुरू शंकराचार्य जी महाराज की आज्ञा से उनके प्रिय शिष्य दण्डी स्वामी जी महाराज ने सर्वजन हिताय नेत्र चिकित्सालय की स्थापना करके नेत्र रोगियों के जीवन में प्रकाश लाने का अनुकरणीय कार्य किया है। मुझे आशा है कि इस चिकित्सालय की स्थापना से इस ग्रामीण अंचल के सभी रोगियों को गुणवत्तायुक्त चिकित्सा का लाभ प्राप्त होगा।

मैं आशा करता हूं कि शंकराचार्य के कृत संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति तथा तपश्चर्या का लाभ मानव समाज को मिलता रहेगा तथा राजनीतिज्ञ,समाजसेवी, आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग, उद्योगपति और व्यवसायी इस से प्रेरणा प्राप्त कर गांवों में भी सर्वसुविधायुक्त आधुनिक अस्पतालों का निर्माण करेंगे।

इस अवसर पर मैं चिकित्सकों से कहना चाहता हूं कि आप यहां अच्छे इलाज की सुविधाओं की आशा लेकर आने वालों के साथ अच्छा व्यवहार करें और उनका विश्वास अर्जित करें। मेरी मंगल कामना है और यही शुभेच्छा है कि सभी स्वस्थ्य, हदय और मन से उल्लासित रहें।

मैं एक बार पुनः शंकराचार्य महाराज को प्रणाम करता हूं और माननीय राष्ट्रपति जी का आभार प्रकट करता हूं।

जय हिन्द।